बी.एच.आई.ई.-142 : आधुनिक पूर्वी एशिया का इतिहास : जापान (1868-1945)
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः बी.एच.आई.ई. -142
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.आई.ई -142 /ए.एस.टी./TMA/2026-2027
अधिकतम अंकः 100

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित है। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) जापानी चिन्तन के विकास के लिए उत्तरदायी प्रमुख धार्मिक और बौद्धिक प्रणालियों की विवेचना कीजिए। 20

2) जापान के प्रमुख क्षेत्रों में औद्योगीकरण के लिए सरकार ने जो प्रयास किए उनकी विवेचना कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) तोकुगावा के तहत अर्थव्यवस्था की प्रकृति एवं विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 10

4) मेजी सरकार में संविधान की प्रकृति का परीक्षण कीजिए। 10

5) पश्चिमी शक्तियों के साथ असमान संधियों को समाप्त करने में जापान के प्रयासों का वर्णन कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) तनाका और जन अधिकार आंदोलन 6

7) दोहरे ढाँचे का निर्माण 6

8) युद्ध और आर्थिक नीतियाँ 6

9) जापान और इंडियन नेशनल आर्मी 6

10) काले जहाजों का आगमन 6

1) जापानी चिन्तन के विकास के लिए उत्तरदायी प्रमुख धार्मिक और बौद्धिक प्रणालियों की विवेचना कीजिए। 20

उत्तर :

जापान के आधुनिक इतिहास को समझने के लिए उसके धार्मिक विश्वासों और बौद्धिक परंपराओं का अध्ययन आवश्यक है। यहाँ चिंतन का विकास किसी एक धर्म अथवा दर्शन से नहीं हुआ; शिंतो की स्थानीय आस्थाएँ, चीन से आए बौद्ध और कन्फ्यूशियस विचार, सामुराई नैतिकता तथा पश्चिमी ज्ञान परस्पर मिलकर सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण बनाते रहे। इन परंपराओं का प्रभाव विशेष रूप से तोकुगावा युग और सन् 1868 के मेजी पुनर्स्थापन के बाद दिखाई देता है। जापान ने बाहर से प्राप्त विचारों को प्रायः अपनी परिस्थितियों के अनुरूप ढालने का प्रयास किया।

शिंतो धर्म और सम्राट की धारणा

शिंतो जापान की स्थानीय धार्मिक परंपरा है, जिसमें प्रकृति, पूर्वजों और 'कामी' अर्थात पवित्र शक्तियों का आदर किया जाता है। इसकी कोई एक संस्थापक पुस्तक या कठोर सिद्धांत-व्यवस्था नहीं थी। शिंतो ने सामुदायिक उत्सवों, पवित्र स्थलों तथा सम्राट-वंश की सांस्कृतिक प्रतिष्ठा को बल दिया। सूर्यदेवी अमातेरासु से सम्राट के पारंपरिक संबंध की मान्यता शाही सत्ता के औचित्य का आधार बनी। मेजी काल में 'राज्य शिंतो' से जुड़े अनुष्ठानों और शिक्षण का उपयोग राष्ट्रीय एकता और सम्राट के प्रति निष्ठा पैदा करने के लिए किया गया। किंतु शिंतो की स्थानीय विविधता और आधुनिक राज्य द्वारा उसके राजनीतिक उपयोग में अंतर करना आवश्यक है।

बौद्ध धर्म और आध्यात्मिक-सामाजिक जीवन

छठी शताब्दी के आसपास कोरिया के माध्यम से बौद्ध धर्म जापान पहुँचा। नारा और हेयान युग में इसकी संस्थाओं ने शिक्षा, कला, साहित्य तथा शाही संरक्षण प्राप्त किया। बाद में शुद्ध भूमि, निचिरेन और जेन जैसी धाराओं ने अलग-अलग सामाजिक वर्गों को प्रभावित किया। विशेषतः जेन परंपरा का ध्यान, अनुशासन और सरलता से संबंध रहा, जिससे सामुराई संस्कृति, उद्यान-रचना, चाय समारोह और चित्रकला में योगदान हुआ। बौद्ध मठ धार्मिक संस्थाएँ भर नहीं थे; वे सांस्कृतिक ज्ञान और कभी-कभी आर्थिक संसाधनों के केंद्र भी थे। शिंतो तथा बौद्ध आस्थाएँ लंबे समय तक